काव्यप्रेम के लिए

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

कविता एक सर्वव्यापी भाषा है।

अर्थात् : यह ब्रह्माण्ड कविता द्वारा अपने आपको सहज ही अभिव्यक्त करता है। इस ब्रह्माण्ड को एक पल के लिए भी थामा नहीं जा सकता, रोका नहीं जा सकता। इसके स्वभाव की यह माँग है कि यह उभरे और विस्तृत होता रहे, थोड़ा और उभरे और आगे भी विस्तृत होता रहे।

इस ब्रह्माण्ड की एक लय है। समय के आरम्भ के साथ इसके स्पन्द का उदय हुआ और इसके आविर्भाव के बाद कल्पों से यह आदिस्पन्द सतत महसूस होता ही रहा है; यह आग्रह करता रहा है कि इसे सुना जाए।

और इसी नाद से हमारे ब्रह्माण्ड में एक आकार-विन्यास का, आकृतियों की एक संरचना का जन्म होता है—अर्थात् उन अणु-परमाणुओं की संरचना का जिनसे सभी चीज़ें व्यवस्थित हैं। वह आदिस्पन्द उन रूपाकारों, विभिन्न ढाँचों व छोटी-छोटी जटिल-सी संरचनाओं द्वारा अभिव्यक्त होता है जिनसे इस सृष्टि को आकार प्राप्त है।

मैं यह सब उसकी प्रस्तावना देने के लिए कह रही हूँ जो अब मैं आपसे कहने वाली हूँ, और वह है—वर्ष २०२२ के लिए श्रीगुरुमाई की 'सीज़न्स् ग्रीटिंग्स्' के बारे में [क्रिस्मस और उसके आस-पास मनाए जाने वाले पर्वों की शुभकामनाओं के बारे में]।

***

मैं एक सन्दर्भ देते हुए इसकी शुरुआत करती हूँ। श्रीगुरुमाई के कहने पर वर्ष २०११ में एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन ने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को पुनः स्थापित किया। और फिर, वर्ष २०१२ से लगभग प्रत्येक वर्ष यह हमारा अहोभाग्य रहा है कि हमें श्रीगुरुमाई से 'सीज़न्स् ग्रीटिंग्स्' रूपी प्रसाद प्राप्त होते रहे हैं।

उत्सवों के इस मौसम के दौरान सिद्धयोगीजन श्रीगुरुमाई से 'सीज़न्स् ग्रीटिंग्स्' के रूप में अपने लिए एक व्यक्तिगत उपहार प्राप्त करने की प्रतीक्षा करते हैं। मैं "व्यक्तिगत" क्यों कह रही हूँ? क्योंकि, भले ही हम सभी को वही 'सीज़न्स् ग्रीटिंग्स्' मिलती हैं, फिर भी इसके विषय में हममें से हरेक का अनुभव अनूठा होता है।

आपमें से अनेक लोगों ने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर यह बताया है कि गुरुमाई जी के इस उपहार का आपके लिए क्या अर्थ है—आपको इसकी अनुभूति किस प्रकार होती है, आप इसे किस प्रकार देखते हैं। आप जो लिखकर भेजते हैं, उसे पढ़ना मुझे हमेशा ही बहुत अच्छा लगता है, और मैं आपके साथ पूरी तरह से एकमत हूँ जब आप कहते हैं कि श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् काव्य है। यह संगीत है। यह कला है। यह पर्वों के मौसम के आगमन की सूचक है और इस मौसम के सर्वोत्कृष्ट तत्त्वों का सार है—वह आनन्द जिसमें कोई झुँझलाहट नहीं, वह शान्ति जिसमें कोई चिन्ता या बेचैनी नहीं, मन्द स्वरों की वह सरसराहट जो कह रही है कि इस विश्व में और भी कुछ है, ऐसा कुछ जो स्वर्णिम झालर से सुशोभित है, ऐसा कुछ जो जादुई है।

मेरे आत्मीय सह-सिद्धयोगियो, आपने वर्णन किया है कि श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् "हृदय में प्रवेश करने के लिए एक काव्यात्मक यात्रा हैं।" आपने कहा कि इसे ग्रहण करना ऐसा है "जैसे चमचमाते गंगाजल में स्नान करना।" आपने कहा है कि "सिद्धयोग के श्रीगुरु की कृपा व सिखावनियाँ इस विश्व के लिए जो करती हैं, ये सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् उसे दृश्यात्मक रूप में अभिव्यक्त करती हैं," और आपने यह भी कहा है कि "इनके संगीत का पहला स्वर सुनते ही आपको श्रीगुरुमाई के दर्शनों की अनुभूति हुई।" इन सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् को ग्रहण कर जो अन्तर-दृष्टियाँ आपके अन्दर उभरीं, आपने उन्हें साझा किया, जिन सिखावनियों का स्मरण आपको हो आया, उनके विषय में आपने लिखा, और वे कविताएँ भी बाँटीं जो आपके अन्दर से स्फुरित हुईं। उदाहरण के लिए, वर्ष २०१६ के लिए श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् का अपना अनुभव बताते हुए एक व्यक्ति ने लिखा :

प्रेम उभरता है मौन से
प्रकट होता है नानाविध रूपों में :
मख़मली नीले सागर,
चमकते सितारे,
जगमगाता स्वर्णिम आलोक,
कुण्डलाकार, चतुर्भुज-आकृतियाँ, गोल आकार
अक्षर, भाषा, और अर्थ,
सभी व्यक्त करते हैं हृदय की परिपूर्णता को।
फिर
प्रेम लौट आता है प्रशान्ति में,
भगवान के मन व शरीर में।

मुझे मालूम नहीं कि आपमें से कितने लोगों को यह ज्ञात है कि श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के डिज़ाइन की संकल्पना स्वयं गुरुमाई जी की होती है और इसकी रचना पूर्ण रूप से उन्हीं के निर्देशों के अनुसार की जाती है। इसकी रचना में गुरुमाई जी का महान परिश्रम निहित होता है, वे घण्टों तक इस कार्य में रत रहती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि उनकी संकल्पना सटीक रूप में अभिव्यक्त हो।

इतना ही नहीं, श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के प्रत्येक पहलू की रचना आप दर्शकों को ध्यान में रखते हुए की जाती है। गुरुमाई जी के लिए आप *हमेशा* ही महत्त्वपूर्ण हैं। आप अपने बारे में चाहे जो भी सोचते हों, गुरुमाई जी आपके बारे में बहुत ऊँचा सोचती हैं, वे आपको सम्मान की दृष्टि से देखती हैं।

मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मैंने इतने वर्षों में श्रीगुरुमाई को कई बार इस विषय में बात करते हुए सुना है कि जब वे सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् की रचना कर रही होती हैं तब वे आपके बारे में, आपकी साधना के बारे में, और आपकी परिस्थितियों व आपके अनुभवों के बारे में सोच रही होती हैं। मैं यहाँ विस्तार से इसकी चर्चा नहीं करूँगी क्योंकि इसे पढ़ने में आपके कई घण्टे लगेंगे, इसके बजाय मैं आपको एक उदाहरण देकर बताऊँगी जिससे आपको यह स्वयं ही ज्ञात हो जाएगा।

वर्ष २०२० में, गुरुमाई जी इस बात से परिचित थीं कि लोगों ने वर्ष का अधिकांश समय घर पर बिताया है क्योंकि मीडिया के ज़रिए यह जानकारी मिल रही थी कि कई देशों में लॉकडाउन था और यात्रा पर अन्य प्रतिबन्ध लगाए गए थे। गुरुमाई जी इस बात को लेकर गम्भीर थीं कि इसका लोगों के मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, विशेषकर इसलिए कि लोग एक-दूसरे से मिल नहीं पा रहे थे। अतः, उस वर्ष की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् में उन्होंने आप सभी को एक तीर्थयात्रा का अनुभव प्रदान करने का निश्चय किया—यह आठ मिनट की एक यात्रा थी जिसका मार्ग दोनों ओर वृक्षों से सुशोभित था। प्रज्वलित दीपों से सुसज्जित वह घुमावदार पथ, शानदार नीलपर्वत की चोटी पर ले जा रहा था और पर्वत के पीछे, क्षितिज से सूर्य धीरे-धीरे उदित हो रहा था।

गुरुमाई जी चाहती थीं कि अपनी शिक्षण-यात्राओं के दौरान जिन तीर्थयात्राओं पर वे गई थीं—जैसे कि मैक्सिको, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया में उन्होंने जो तीर्थयात्राएँ की थीं, उस समय उन्हें जो महसूस हुआ था, वैसा ही आप इस सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् को देखकर महसूस करें। इस तरह, भले ही आप त्यौहारों के उस समय में भौतिक रूप से कहीं यात्रा नहीं कर पा रहे थे, आपको उदासी महसूस करने की आावश्यकता नहीं थी। आप तब भी मुक्तरूप से श्वास ले सकते थे और यह स्मरण रख सकते थे कि चाहे जो कुछ भी हो, आपकी दिव्यता अबाधित है। गुरुमाई जी आपको सिखा रही थीं

कि भले ही ऐसा लगे कि आपके वास्तविक जीवन पर प्रतिबन्ध हों, भले ही आपका मन बहुत तेज़ी-से दौड़ रहा हो और ऐसा लग रहा हो कि आगे अँधेरा ही अँधेरा छाया हुआ है और यही चिन्ता आपको सताए जा रही हो, तब भी आप यह याद रख सकते हैं कि आपके अन्दर के प्रकाश पर कभी ग्रहण नहीं लगेगा।

चूँकि गुरुमाई जी अपनी सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् की रचना के लिए *बहुत* मेहनत करती हैं, हमें चाहिए कि हम यह जागरूकता बनाए रखें कि उसमें हमारे लिए काफ़ी कुछ होता है जिसे हम ग्रहण करें, अपने अन्दर उतारें, जिसके साथ हम बने रहें। मुझे हमेशा यह लगता है कि उसमें और भी बहुत कुछ ऐसा होता है जिसे आँखें नहीं देख सकतीं। मेरा यह अनुभव रहा है कि इसका वर्णन करना आसान नहीं होता, इसका सारांश बताया नहीं जा सकता, और न ही संक्षिप्त में इसके बारे में कुछ कहा जा सकता है।

तथापि, एक बात जो मैं निश्चित ही कह सकती हूँ, वह यह कि सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् *हमेशा* एक यात्रा को दर्शाती है। कभी यह यात्रा स्पष्ट रूप से चित्रित की गई होगी, जैसे कि वर्ष २०२० में; और कभी यह अधिक प्रतीकात्मक होगी जिसमें चीज़ें स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त न करते हुए उन्हें केवल सांकेतिक या प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया होगा; और उन्हें देखते ही उस रचना की काव्यात्मकता के प्रति हमारे मन में सराहना का भाव उभर सकता है। जो स्मरण रखना आवश्यक है, वह यह कि आपको जो भी रंग, आकार व संरचनाएँ इसमें दिखती हैं, इसमें जो भी शब्द प्रकट व विलीन होते हैं और जो संगीत इसके हरेक तत्त्व में गुंजायमान होता है—यह सब एक *आन्तरिक* यात्रा है जिस पर चलने के लिए गुरुमाई जी आपका मार्गदर्शन कर रही हैं। यह आपकी विशेष तीर्थयात्रा है—जिसे आपकी परमप्रिय श्रीगुरु ने आपके लिए रचा है।

अकसर ऐसा होता है कि जब सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् की रचना हो रही होती है तब गुरुमाई जी अपनी कल्पनाओं व विचारों को उन प्रतिभाशाली लोगों के समक्ष प्रकट करती हैं जो उन सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् की रचना के लिए सेवा अर्पित कर रहे होते हैं, और गुरुमाई जी यह भी बताती हैं कि उसमें निहित छवियाँ और सिखावनियाँ किस प्रकार लोगों की साधना को आलोकित करेंगी। इस वर्ष, पहली बार, गुरुमाई जी ने कहा है कि उनके एक अनुभव को सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर बताया जाए।

यह अनुभव श्रीगुरुमाई के प्रज्ञान की, मात्र शब्दों में की गई एक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि इसका प्रयोजन यह है कि इससे आपको प्रेरणा मिले। गुरुमाई जी ने समझाया है कि उनके प्रज्ञान को ग्रहण कर अनेक लोगों को गहन अनुभूतियाँ होती हैं—फिर भी, वे लोग अपनी उन अनुभूतियों पर ग़ौर नहीं करते, या तो इसलिए कि उनके पास समय नहीं होता या फिर इसलिए कि उस क्षण में वे जो

अनुभव कर रहे होते हैं, उसके मूल्य को वे पहचान नहीं पाते। इसके परिणामस्वरूप होता यह है कि उन अनुभवों की स्पष्टता व जीवन्तता तुरन्त खो जाती है; और उन्हें याद करने में लोगों को कठिनाई होती है। इसी कारण हम सबके लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि हमें जिन सिखावनियों के दर्शन हो रहे हैं, जिन सिखावनियों को हम अपने अन्दर उतार रहे हैं और जिनका हम अभ्यास कर रहे हैं, उनसे उभरने वाले अनुभवों को हम लिख लें। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि श्रीगुरुमाई चाहती हैं कि हम अपने अन्दर के ख़ज़ाने का ख़ूब आनन्द उठा पाएँ।

जब गुरुमाई जी सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् की रचना करने के लिए सेवाकर्ताओं को निर्देश दे रही थीं, तब जो कमाल के लोग इस पर कार्य कर रहे थे उनमें से दो लोग गुरुमाई जी को दिखा रहे थे कि उनकी परिकल्पना को साकार रूप देने का कार्य कहाँ तक पहुँचा है। उसके बाद, गुरुमाई जी ने उनसे कहा कि वे प्रसन्न हैं क्योंकि उन्होंने गुरुमाई जी के शब्दों व संकल्पनाओं के सार को पूरी तरह से समझ लिया है, वे समझ पाए हैं कि वह क्या है जिसकी रचना गुरुमाई जी उनसे करवाना चाहती हैं। गुरुमाई जी ने समझाया कि वे इस बात को निश्चितता के साथ कह पा रही थीं क्योंकि जब वे सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् को देख रही थीं, तब एक सोते की भाँति एक कविता के शब्द उनके अन्दर से स्फुरित होने लगे जो उनके श्वास की लय के साथ उभर रहे थे।

गुरुमाई जी ने कहा, "ऐसा लग रहा था मानो वह मेरे श्रीगुरु, बाबा मुक्तानन्द से एक प्रार्थना थी जो मेरे अन्तर से उदय हो रही थी जब मैं अपनी कामना को साकार होते हुए देख रही थी—उत्सव के इस मौसम में संसार को अपनी शुभेच्छाएँ देने की मेरी कामना।"

आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर गुरुमाई जी की यह कविता पढ़ सकते हैं, जिसका शीर्षक है, 'अपने श्रीगुरु से एक प्रार्थना।' इस कविता के बारे में एक मुख्य बात है जिस पर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ, और वह है : कविता के अन्त में प्रयुक्त लोप चिह्न यानी वे तीन बिन्दु जो मानो धीरे-धीरे आकाश में विलीन-से हो रहे हैं और कविता का एक निश्चित समापन नहीं किया गया है। लोप चिह्न का प्रयोग निस्सन्देह विचारपूर्वक किया गया चुनाव था। गुरुमाई जी ने बताया कि यह इस बात का संकेत है कि कविता किस प्रकार निरन्तर गतिशील हो रही है, यह विकसित और विस्तृत होती जा रही है।

गुरुमाई जी ने कहा, "यह कविता उस धूमकेतु की तरह है जो आकाश के गुम्बद पर इस ओर से उस ओर तक तोरणरूप में सजा है; यह उस नदी की भाँति है जो अन्तहीन प्रवाहित होती है। इसके शब्द सारे भूमण्डल पर बिखेरने पर भी वे अनन्तता तक, चिरन्तनता तक बिखरते ही रहेंगे। यह है गुरुकृपा की शक्ति और साधना को समर्पित जीवन की शक्ति।"

***

तो अब, हम यहाँ आ पहुँचे हैं—१ दिसम्बर को हमने २०२२ के लिए श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् को ग्रहण कर लिया है, और अभी हमने इन सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के उनके अनुभव को पढ़ लिया है जो कि कविता के रूप में है और यह कविता अनेकानेक रूपों में अनन्त है। इस विपुल प्रज्ञान और इन आशीर्वादों को प्राप्त कर, मैं सोच रही हूँ कि *आप* विचार कर रहे होंगे : अब, हमें क्या करना चाहिए?

मैं एक सुझाव देना चाहती हूँ। [और हाँ—ठीक है—मैं यह मानती हूँ कि *शायद* मैं यह सुझाव देने की तैयारी करके आई हूँ और *शायद* मैं इस क्षण का बेसब्री से इन्तज़ार कर रही थी कि कब मैं इसे आपके साथ बाँटूँ। मैं क्या कहूँ? इसे आपके साथ बाँटने के लिए मैं *बहुत* उत्साहित हूँ।]

मेरा सुझाव है कि आप और मैं—हम सभी—समय निकालकर सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के विषय पर अपनी एक कविता लिखें।

स्मरण रखें : कविता लिखने के बारे में एक जो बहुत बढ़िया बात है वह यह कि हम किसी निश्चित शब्द-संख्या में ही कविता लिखने के लिए बाध्य नहीं हैं। हमारी कविता को किसी थीसिस की तरह होने की ज़रूरत नहीं है; इसे किसी चार भागों वाले नाटक की तरह, या ‘इलियाड’ या ‘महाभारत’ जैसे महाकाव्यों की तरह होने की आवश्यकता भी नहीं है। इसमें बस कुछ ही शब्द हो सकते हैं। कविता सूत्र की तरह होती है। इसमें हमारे अनुभवों का रस समाया होता है।

हाल ही में एक बच्चे ने मुझे बताया कि वर्ष २०२२ के लिए श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् देखकर उसकी क्या प्रतिक्रिया रही। यह एक वीडिओ के रूप में था जो उसकी माँ ने रिकॉर्ड किया था। इस वीडिओ में वह एक कविता गा रहा था जो सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् देखकर उसके अन्दर से सहज ही उभरी थी। “आप मेरी गुरु हैं, उदित होते सूरज की तरह!” वह उल्लसित होकर इसे गा रहा था। उसने यह पंक्ति दोबारा गाई—और फिर तीसरी बार गाई—वह और भी ऊँचे स्वर में गाने लगा, इस पंक्ति को बार-बार गाते-गाते उसकी आवाज़ में उसकी प्रसन्नता, उसका हर्ष अधिकाधिक झलकने लगा। “आप मेरी गुरु हैं, उदित होते सूरज की तरह! आप मेरी गुरु हैं, उदित होते सूरज की तरह!”

यह छोटा बच्चा नहीं जानता था कि गुरुमाई जी ने सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के अपने एक अनुभव को एक कविता के रूप में अभिव्यक्त किया है, और न ही उसे यह मालूम था कि हम सब भी कविताएँ लिखने वाले हैं। उसके अन्दर से स्वतःस्फुरित रूप में जो उभरी, वह थी, एक कविता। यह उसके अनुभव की सहज अभिव्यक्ति थी।

अतः हम यह सोच सकते हैं कि कविता पहले से हमारे अन्दर, हमारे लिए सुलभ है ही; यह अपने मूल, विशुद्ध तथा गहन स्वरूप में हमारे अन्दर मौजूद है। कदाचित्, हमारा काम यही है कि हम उन शब्दों को खोज निकालें और अपने काव्य को काग़ज़ पर उतारकर उनका सम्मान करें।

और फिर, एक बार जब हमने अपनी कविताएँ लिख ली हों तो हम उनका क्या करें? आपमें से कुछ लोगों ने अनुमान लगा ही लिया होगा कि मैं क्या कहने जा रही हूँ। जी हाँ बिल्कुल, हम उन्हें एक-दूसरे के साथ बाँट सकते हैं! ऐसा करने का एक तरीक़ा है कि आप उन्हें सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर भेजें।

अब, चाहे आपको लगता हो कि आपने एक अत्युत्कृष्ट कृति की रचना की है—एक आदर्श कविता लिखी है, सर्वोत्तम पद्य की रचना की है—या फिर आपने किसी तरह ख़ुद को समझा लिया है कि आपने जो लिखा है वह छोटे बच्चों की नर्सरी की किसी आम कविता से बेहतर नहीं है, मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप उन्हें वेबसाइट पर ज़रूर भेजें। मुझे एक अन्दर की बात पता चली है ☺ कि इनमें से कुछ कविताएँ विश्व में सभी के साथ बाँटने के लिए चुनी जाएँगी। और क्या पता : इनमें से एक कविता आपकी भी हो!

मैं एक और सुझाव देना चाहती हूँ कि आने वाले दिनों व सप्ताहों में, आप अपनी लिखी हुई कविताओं को पुनः पढ़ें। इससे आपको सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के अपने आरम्भिक अनुभवों को याद करने और उन्हें बढ़ाने में मदद मिलेगी। और यदि आप और कविताएँ लिखना चाहें तो जी हाँ, बिलकुल, ज़रूर लिखते रहें! अपने अन्दर बैठी कोयल को कूजने दें! अपने आपको यह खोजने का अवसर दें कि जो प्रज्ञान आपकी सत्ता में विद्यमान है वह उभरकर कितना अधिक प्रकट होना चाहता है, कितना अधिक विस्तृत होना चाहता है—यह और भी अधिक प्रकट होना चाहता है, और उससे भी आगे विस्तृत होना चाहता है।

जैसा कि श्रीगुरुमाई ने सभी से बारम्बार कहा है : “तुम *महान* हो।”

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।